Regd. With the Registrar of News Papers of India at PUN BIL/2002/07848
Postal Reg. No. GDP-41/2017-19

मासिक

मजिल्स अन्सारुल्लाह भारत का तर्जुमान

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

मई / 2020 ई०

Annual Subscription: Rs. 210/- (Per Issue: Rs. 20/-
(Weight : 50-100, grms / Issue)

व्यक्ति गत सम्बन्ध

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला अन्हों फरमाते हैं कि

"कौन सा डिक्टेटर है जो अपने देश की प्रजा से व्यक्तिगत सम्बन्ध भी रखता हो। समय के ख़लीफ़ा का तो दुनिया में फैली हुई हर क़ौम और हर नस्ल के अहमदी से व्यक्तिगत सम्बन्ध है। उनके व्यक्तिगत पत्र आते हैं जिनमें उनके व्यक्तिगत मामलों का वर्णन होता है। इन रोज़ाना के पत्रों को ही अगर देखें तो दुनिया वालों के लिए एक यह अवि श्वसनीय बात है यह ख़िलाफ़त ही है जो दुनिया में बसने वाले हर अहमदी की तकलीफ़ पर ध्यान देती है। उनके लिए समय का ख़लीफ़ दुआ करता है। कौन सा दुनियावी लीडर है जो बीमारों के लिए दुआएं भी करता हो। कौन सा लीडर है जो अपनी क़ौम की बच्चि यों केरिश्तों के लिए बेचैन और उनके लिए दुआ करता हो। कौन सा लीडर है जिसको बच्चों की शिक्षा की फ़िक्र हो। हुकूमत बेशक शैक्षिक संस्थाएं भी खोलती है। सेहत के विभाग भी खोलती है। शिक्षा तो उपलब्ध करती है लेकिन बच्चों की शिक्षा जो इस दुनिया में फैले हुए हैं उनकी फ़िक्र सिर्फ आज समय के ख़लीफ़ा को है। जमाअत अहमदिया के लोग ही वे ख़ुश-क़िस्मत हैं जिनकी फ़िक्र समय के ख़लीफ़ा को रहती है कि वह शिक्षा प्राप्त करें। उनकी सेहत की फ़िक्र समय के ख़लीफ़ा को रहती है। रिश्तों की समस्याएं हैं। अतः कि कोई मसला भी दुनिया में फैले हुए अहमदियों का चाहे वह व्यक्तिगत हो या जमाअत का ऐसा नहीं जिस पर समय के ख़लीफ़ा की नज़र न हो और इस के हल के लिए वह व्यावहारिक कोशिश के अतिरिक्त अल्लाह तआला के समक्ष झुकता न हो। इस से दुआएं न मांगता हो। मैं भी और मेरे से पहले खलीफ़ा भी यही कुछ करते रहे। मैंने एक नक्शा खींचा है बेशुमार कामों का जो समय के ख़लीफ़ा के सपुर्द ख़ुदा तआला ने किए हैं और उन्हें उसने करना है। दुनिया का कोई देश नहीं जहां रात सोने से पहले कल्पना की आंश से मैं न पहुंचता हूँ और उनके लिए सोते वक़्त भी और जागते वक़्त भी दुआ न हो।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 6 जून 2014 ई)

7 मार्च 2020 को मज्लिस अन्सारुल्लाह करडापल्ली (ओडिशा) द्वारा आयोजित तब्लीगी कार्यक्रम का एक दृश्य।

29 फ़रवरी यौम-ए-मुस्लेह मौऊद के उपलक्ष में मज्लिस अन्सारुल्लाह तल्ग्राम ज़िला इब्राहिमपुर (बंगाल) द्वारा आयोजित नि:शुल्क मैडिकल कैम्प का दृश्य।

श्री रईसुद्दीन अहमद क़ाईद सहेत एवं जिस्मानी मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की अध्यक्षता में मज्लिस अन्सारुल्लाह जम्शेद्पूर (झारखण्ड) द्वारा आयोजित तरबियती इजलास का एक दृश्य।

श्री रफ़ीक़ अहमद बेग क़ाईद माल मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत की अध्यक्षता में मज्लिस अन्सारुल्लाह सुरधा द्वारा आयोजित मीटिंग का एक दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह चेन्नई (तमिल नाडू) द्वारा आयोजित तरबियती इजलास का एक दृश्य।

मज्लिस अन्सारुल्लाह पालाकुर्ति ज़िला वरंगल (तेलंगाना) द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में श्री मुहम्मद नज़ीर अहमद अमीर ज़िल्ला, श्री मुहम्मद अकबर मुबल्लिग इंचार्ज मास्क एवं सैनीटाइज़र वितरण करते हुए।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْٓا اَنْصَارَ اللّٰهِ

سورة الصف آيت ١٥

निगरान

अताउल मुजीब लोन

सम्पादक

सय्यद रसूल नियाज़

उप-सम्पादक

शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री

09915379255

मैनेजर

मक्सूद अहमद भट्टी

Ph. +91 84272 63701

कम्पोज़िंग

तसनीम अहमद बट्ट

प्रैस

फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रैस क़ादियान

वार्षिक मूल्य : 210 ₹

विदेश : 50 अमरीकी डॉलर

प्रकाशन स्थान

ऐवाने अन्सार, भारत

क़ादियान - 143516

ज़िला : गुरदासपुर, पंजाब

फोन : 01872-220186

फैक्स : 01872-224186

मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत का प्रवक्ता

मासिक पत्रिका

अन्सारुल्लाह

क़ादियान

Volume - 18 मई 2020 **Issue - 5**

विषय सूची	पृष्ठ

दर्सुल क़ुर्आन	2
दर्सुल हदीस	2
हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के प्रवचन	3
सम्पादकीय - कोरोना वायरस और समय के ख़लीफा से सुनहरी उपदेश	4
सदर मज्लिस अन्सारुल्लाह का निवेदन - वर्तमान समय में वक्त का उचित प्रयोग	6
हमारा ख़ुदा (तकरीर सालाना इज्तिमा 2020 ई)	8
तरबियत औलाद (तकरीर सालाना इज्तिमा 2020 ई)	9

Printed & Published by Shoaib Ahmad M.A. and owned by Majlis Ansarullah Bharat Qadian and Printed at Fazle Umar Printing Press, Harchowal Road, Qadian Distt. Gurdaspur 143516, Punjab, INDIA and Published at Office Majlis Ansarullah Bharat, P.o. Qadian, Distt. Gurdaspur 143516 Punjab India. Editor Syed Rasool Niyaz

قرآن کریم दर्सुल क़ुर्आन

وَ اِذۡ جَعَلۡنَا الۡبَیۡتَ مَثَابَۃً لِّلنَّاسِ وَ اَمۡنًا ؕ وَ اتَّخِذُوۡا مِنۡ مَّقَامِ اِبۡرٰہٖمَ مُصَلًّی ؕ وَ عَہِدۡنَاۤ اِلٰۤی اِبۡرٰہٖمَ وَ اِسۡمٰعِیۡلَ اَنۡ طَہِّرَا بَیۡتِیَ لِلطَّآئِفِیۡنَ وَ الۡعٰکِفِیۡنَ وَ الرُّکَّعِ السُّجُوۡدِ ﴿۱۲۶﴾

(सूर: अलबक़र: आयत 186)

अनुवाद - और जब हम ने (अपने) घर को लोगों के बार-बार इकट्ठा होने की और अमन की जगह बनाया और इब्राहीम के स्थान में से नमाज़ की जगह पकड़ो और हम ने इब्राहीम और इस्माईल को ताकीद की कि तुम दोनों मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और एतिकाफ़ बैठने वालों और रुकू करने वालों (और) सिज्दा करने वालों के लिए अच्छी तरह पवित्र तथा साफ़ बनाए रखो।

दर्सुल हदीस

عَنۡ عَآئِشَۃَ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہَا قَالَتۡ قَالَ رَسُوۡلُ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ عَشۡرٌ مِّنَ الۡفِطۡرَۃِ قَصُّ الشَّارِبِ وَاِعۡفَآءُ اللِّحۡیَۃِ، وَالسِّوَاکُ وَاسۡتِنۡشَاقُ الۡمَآءِ، وَقَصُّ الۡاَظۡفَارِ، وَغَسۡلُ الۡبَرَاجِمِ، وَنَتۡفُ الۡاِبۡطِ وَحَلۡقُ الۡعَانَۃِ، وَانۡتِقَاصُ الۡمَآءِ قَالَ الرَّاوِیۡ وَنَسِیۡتُ الۡعَاشِرَۃَ اِلَّا اَنۡ تَکُوۡنَ الۡمَضۡمَضَۃُ، قَالَ وَکِیۡعٌ، وَھُوَ اَحَدُ رُوَاتِہٖ اِنۡتِقَاصُ الۡمَآءِ یَعۡنِی الۡاِسۡتِنۡجَآءَ۔

अनुवाद हज़रत आयशा रज़ि वर्णन करती हैं कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया दस बातें इन्सानी फितरत में शामिल हैं। मूँछें तराशना , दाढ़ी रखना , मिस्वाक करना, पानी से नाक साफ़ करना, नाख़ुन कटवाना , उंगलियों के पूरे साफ़ रखना , बग़लों के बाल काटना , नाभि के नीचे बाल काटना, इस्तिंजा करना। रिवायत करने वाला कहता है कि मैं दसवीं बात भूल गया हूँ, शायद वह (खाने के बाद)कुल्ली करना है।

(मुस्लिम किताबुत्तहारत बाब ख़िसालुल फ़ितरत)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दिव्य उपदेश

जमाअत के आदमियों को याद रखना चाहिए कि सिर्फ हाथ पर हाथ रखने से कुछ बनता है

जब तक कि हमारी शिक्षा पर अनुकरण न किया जाए

अप्रैल 1907 ई को हज़ूर सुबह सैर के समय रास्ता में हज़रत मुफ़्ती मुहम्मद सादिक़ रज़ि साहिब सम्पादक अख़बार अलबदर को सम्बोधित कर के फरमाया कि

"अख़बार में छाप दो और सब को सूचित कर दो कि ये दिन ख़ुदा तआला के क्रोध के दिन हैं। अल्लाह तआला ने कई बार मुझे वह्य के माध्यम से फ़रमाया है कि غَضِبْتُ غَضَبًا شَدِيدًا आजकल ताऊन बहुत बढ़ता जाता है और चारों तरफ़ आग लगी हुई है। मैं अपनी जमाअत के लिए ख़ुदा तआला से बहुत दुआ करता हूँ कि वे इस को बचाए रखे। मगर क़ुरआन शरीफ़ से यह प्रमाणित है कि जब इलाही क़हर नाज़िल होता है तो बदों के साथ नेक भी लपेटे जाते हैं और फिर उनका हश्र अपने अपने कर्मों के अनुसार होगा। देखो हज़रत नूह का तूफ़ान सब पर पड़ा और स्पष्ट है कि प्रत्येक मर्द औरत और बच्चे को इस से पूरे तौर पर ख़बर न थी कि नूह का दावा और इस के तर्क क्या हैं। जिहाद में जो विजय हुईं वे सब इस्लाम की सच्चाई के लिए निशान थीं। लेकिन हर एक में कुफ़्फ़ार के साथ मुसलमान भी मारे गए। काफ़िर जहन्नुम को गया और मुसलमान शहीद कहलाया। ऐसा ही ताऊन हमारी सच्चाई के लिए एक निशान है और संभव है कि इस में हमारी जमाअत के कुछ आदमी भी शहीद हूँ। हम ख़ुदा तआला के हुज़ूर दुआ में व्यस्त हैं कि वह उनमें और ग़ैरों में अन्तर स्थापित रखे लेकिन जमाअत के आदमियों को याद रखना चाहिए कि सिर्फ हाथ पर हाथ रखने से कुछ नहीं बनता है जब तक कि हमारी शिक्षा पर अनुकरण न किया जाए। सबसे प्रथम अल्लाह के अधिकारों को अदा करो। अपने नफ़्स को भावनाओं से पवित्र रखो। इस के बाद बन्दों के अधिकारों को अदा करो और नेक कर्म को पूरा करो। ख़ुदा तआला पर सच्चा ईमान लाओ और विनय के साथ ख़ुदा तआला के समक्ष में दुआ करते रहो और कोई दिन ऐसा न हो जिस दिन तुम ने ख़ुदा तआला के हुज़ूर रो कर दुआ न की हो। इस के बाद ज़ाहरी माध्यमों का ध्यान रखो। जिस मकान में चूहे मरने शुरू हूँ उस को ख़ाली कर दो। और जिस मुहल्ला में ताऊन हो इस मुहल्ला से निकल जाओ और किसी खुले मैदान में जाकर डेरा लगाओ। जो तुम में से इलाही तक़दीर के अनुसार ताऊन में पीड़ित हो जाए उस के साथ और इस के परिजनों के साथ पूरी हमदर्दी करो और हर तरह से इस की मदद करो और इस के ईलाज तथा चिकित्सा में कोई तरीक़ा बाकी न रखो लेकिन याद रहे कि हमदर्दी के यह माने नहीं कि इस के ज़हरीले सांस या कपड़ों से प्रभावित हो जाओ। बल्कि इस प्रभाव से बचो। उसे खुले मकान में रखो और जो ख़ुदा न चाहे इस बीमारी से मर जाए वह शहीद है। इस के लिए नहलाने की ज़रूरत नहीं और न नया कफ़न पहनाने की ज़रूरत है। इस के वही कपड़े रहने दो और हो सके तो एक सफ़ेद चादर उस पर डाल दो और क्योंकि मरने के बाद लाश में ज़हरीला प्रभाव अधिक तरक़्क़ी करता है इस लिए सब लोग उस के गर्द जमा न हों। आवश्यकता अनुसार दो तीन आदमी उस की चारपाई को उठाएं और बाक़ी सब दूर खड़े हो कर जैसे एक सो गज़ की दूरी पर जनाज़ा पढ़ें। जनाज़ा एक दुआ है और इस के लिए ज़रूरी नहीं कि इन्सान लाश के सिर पर खड़ा हो। जहां क़ब्रिस्तान दूर हो जैसे लाहौर में सामान हो सके तो किसी गाड़ी या छकड़े पर लाश को लादकर ले जाएं और लाश पर किसी प्रकार का रोना धोना न किया जाए। ख़ुदा तआला के कर्म पर एतराज़ करना गुनाह है।

इस बात का ख़ौफ़ न करो कि ऐसा करने से लोग तुम्हें बुरा कहेंगे वे पहले कब तुम्हें अच्छा कहते हैं। ये सब बातें शरीयत के अनुसार हैं और तुम देख लोगे कि अन्त में व लोग जो तुम पर हंसी करेंगे ख़ुद भी इन बातों में तुम्हारा अनुकरण करेंगे।

पुन: यह बहुत अनिवार्य है कि जो मकान तंग और अन्धेरा हो और हवा और रोशनी अच्छी तरह पर न आ सके उस को अति शीघ्र छोड़ दो क्योंकि ख़ुद ऐसा मकान ही ख़तरनाक होता है यद्यपि कोई चूहा भी इस में न मरा हो और यथा शक्ति मकानों की छतों पर रहो। नीचे के मकान से परहेज़ करो और अपने कपड़ों को सफ़ाई से रखो। नालियां साफ़ कराते रहो। सबसे प्रथम यह कि अपने दिलों को भी साफ़ करो और ख़ुदा तआला के साथ पूरी सुलह कर लो।

(मल्फ़ूज़ात भाग 5 संस्करण 1988 ई पृष्ठ 195-194)

सम्पादकीय

करोना वाइरस और समय के ख़लीफा के सुनहरे उपदेश

अत्यन्त भयंकर जानलेवा महामारी "करोना वाइरस" ने चीन के एक मशहूर शहर योहान में नवम्बर 2019 ई में आँखें खोलीं। आज 8 अप्रैल 2020 ई की रिपोर्टों के अनुसार दुनिया के 193 देशों में यह बीमारी फैल चुकी है 125093 लोग इस महामारी से मारे गए हैं जबकि 20 लाख से अधिक इस बीमारी का शिकार हो गए हैं। भारत में अब तक 124 लोगों की मौत हो चुकी है। और 4,789 प्रभावित हैं। (दैनिक साक्षी तेलुगू 15-4-2020)बहरहाल सारी दुनिया में दैनिक प्रभावित और मौतों में वृद्धि हो रही है। अल्लाह तआला रहम फ़रमाए।

दूसरे मुसलमान सही मार्गदर्शन से वंचित होने कि कारण कई परेशामियों का शिकार होते हैं। लेकिन यह हमारा सौभाग्य है कि हम ख़िलाफ़त के निज़ाम के अधीन हैं। ख़िलाफ़त हमारे हक़ में ढाल साबित हो रही है। अल्लाह तआला अपने ख़लीफ़ा के माध्यम से हमारा मार्ग दर्शन फ़रमाता है। अत: सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने जुम्अ: के ख़त्बों में और ख़तों के माध्यम पर हर अवसर पर निरन्तर इस बारे में हमें सुनहरी हिदायतें प्रदान फरमा रहे हैं। कुछ प्रमुख हिदायतें नीचे वर्णन की जाती हैं

(1) हुकूमतों और विभागों की तरफ़ से बताई जाने वाली सावधानियों पर हम सब को अनुकरण करना चाहिए।

(2) डाक्टरों की हिदायतों के अनुसार हाथ और चेहरा साफ़ रखें। हाथ अगर गंदे हैं तो चेहरे पर हाथ न लगाऐं और हाथों पर सेनेटाइज़र (sanitizer) लगा कर रखें या धोते रहें।

(3) अगर कोई पाँच वक़्त का नमाज़ी है और पाँच वक़्त नियमित वुज़ू भी कर रहे हैं, नाक में पानी भी चढ़ा रहे हैं और इस से नाक साफ़ हो रहा है और सही तरह वुज़ू किया जा रहा है तो यह सफ़ाई का एक ऐसा उच्च स्तर है जो सेनेटाइज़र की कमी भी पूरा कर देता है।

(4) हाथ मिलानों से परहेज़ करो। यह भी बहुत ज़रूरी है। कोई पता नहीं किस के हाथ किस किस्म के हैं। इस लिहाज़ से यद्यपि हाथ मिलाने से सम्बन्ध बढ़ता है, मुहब्बत बढ़ती है लेकिन आजकल इस बीमारी की वजह से परहेज़ करना ही बेहतर होता है

(5) कुछ होम्योपैथी दवाईयां बहुत शुरू में मैंने होमियोपैथ से परामर्श कर के बताई थीं जो सुरक्षा के आरम्भिक स्तर के रूप में भी हैं और कुछ ईलाज के रूप में भी। इनको प्रयोग करना चाहिए। यह एक संभावित ईलाज है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 6 मार्च 2020 ई)

(6) मस्जिदों में भी जब आएं तो सावधानी से जएं। हल्का सा बुख़ार इत्यादि हो, जिस्म की तकलीफ़ हो तो ऐसी जगहों पर न जाएं जहां पब्लिक स्थान हैं और ख़ुद भी बचें और दूसरों को बचाएं।

(7) दुआओं की तरफ़ बहुत ध्यान दें। अल्लाह तआला दुनिया को मुसीबतों से बचाए।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 13 मार्च 2020 ई)

(8) बड़ी उम्र के लोग,बीमार लोग,ऐसी बीमारी में पीड़ित लोग जिनके शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति कम हो जाती है उन को बहुत अधिक सावधानी करने की

ज़रूरत है। बड़ी उम्र के लोग घरों से कम निकलें।

(9) डाक्टर भी आजकल यही कह रहे हैं कि अपने शरीर की प्रतिरक्षा शक्ति बढ़ाने के लिए अपने आराम पर भी ध्यान देना चाहिए। इस के लिए अपनी नींद को पूरा करना चाहिए। अपनी नींद पूरी करें।

(10) बच्चों को भी आदत डालें कि जल्दी सोएँ और जल्दी उठें।

(11) बाज़ार की वस्तुएं खाने से परहेज़ करें उन से भी बीमारियां फैलती हैं।

(12) पानी बार बार पीना चाहिए। ज़रूरी है कि एक घंटे बाद, आधे पौने घंटे बाद एक दो घूँट पी लें। यह भी बीमारी से बचने के लिए एक माध्यम है।

(13) छींक के बारे में मैं पहले भी कह चुका हूँ मस्जिदों में भी और प्राय अपने घरों में बैठे हुए भी रूमाल आगे रखकर,नाक पर रख कर या डाक्टर कहते हैं कुछ कि बाज़ू अपना सामने रख के इस पर छींकें ताकि इधर उधर छींटे ना उड़ें।

(14) बहरहाल सफ़ाई बहुत ज़रूरी है और इस तरफ़ ख़्याल रखना चाहिए। लेकिन आख़िरी तरीका दुआ है और यह दुआ करनी चाहिए कि अल्लाह तआला हम सब को इस की बुरे प्रभाव से बचाए।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 20 मार्च 2020 ई)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें इन हिदायतों पर अनुकरण करते हुए इस महामारी से सुरक्षित रहने की तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

हाफ़िज़ सय्यद रसूल नयाज़

INDIAN AUTO

हर प्रकार की मोटर गाड़ियों के पार्टस सस्ते रेट पर खरीदें।

P. Ali Koya

CALICUT (KERALA)

"शिक्षा प्राप्त करना हर मुस्लिम पुरुष एवं स्त्री का कर्त्तव्य है"

MUSTAFA BOOK CO

All kinds of Academic Book of Kerala Board, CBSE, ISCS & Universities

Fort Road

KANNUR-1 (KERALA)

Mobile : 09895655426

SONET SOLUTIONS

PRIVATE LIMITED

No.41, II Cross, Doctors Layout,
Kasturi Nagar,
BANGALORE - 560043

तालिबे दुआ :

MUSADDIQ AHMAD

Mobile : 098451-98560

Tel : +91 (80) 41636612

Web : www.sonetsolutions.in

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह का निवेदन

वर्तमान समय में वक्त का उचित प्रयोग

करोना वाइरस के कारण से इस समय दुनिया के हालात बहुत नाज़ुक बने हुए हैं। दुनिया के प्रत्येक देश में हुकूमतें अपने लोगों को बचाने के लिए कदम उठा रहे हैं। भारत के प्रधानमन्त्री और प्रान्तों के मुख्यमन्त्री विभिन्न कोशिशें कर रहे हैं। विभिन्न सरकारी विभाग लोगों के बचाने के लिए दिन रात काम कर रहे हैं। अल्लाह तआला प्रत्येक को इस का बदला दे। ऊपर वर्णन किए गए प्रयासों में से एक प्रयास लाकडाउन है। इस लाकडाउन के कारण में से हम से अधिकतर का समय अपने घरों पर गुज़र रहा है। इस अवस्था में ज़रूरत इस बात की है कि हम अपने समय का उचति प्रयोग करें।

हम उस समय के मसीह के अनुयायी हैं जिस को अल्लाह तआला ने सम्बोधित करते हुए फरमाया है कि "अन्तश्शैयखुल मसीह अल्लज़ी ला युज़ाअ वक्तहू" अर्थात तू वह सम्मान्नीय मसीह है जिस का समय नष्ट नहीं किया जाएगा अत: इस तरह के सम्मान्नीय मसीह के अनुयायी होने के कारण से हमारा कर्तव्य है कि लाकडाउन की इस वर्तमान अवस्था में हम अपने समय को नष्ट करने वाले न हों बल्कि इस समय को भी हम अपने, अपने बच्चों घर वालों के इल्मी तथा रूहानी तरक्की का माध्यम बनाने वाले हों। हज़रत अमूरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपने विशेष सन्देश 27 मार्च 2020 ई में हुज़ूर ने फरमाया

" बहुत सी प्रतिक्रियाएं तो आजकल विभिन्न दुनयावी साइंस पर दुनियादार भी कर रहे हैं कि इस कारण से हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को बेहतर करने की तौफीक़ मिल रही है। और हमारी घरेलू ज़िन्दगी वापस आ गई है। अत: हमें भी अपनी घरेलू ज़िन्दगी को अपनी अवस्थाओं के सुधारते हुए अपने बच्चों की तरबियत करते हुए गुज़ारने की कोशिश करनी चाहिए।"

इन नसीहतों की रोशनी में अन्सार भाई नीचे लिखी गई हिदायतों का पालन करें ताकि समय का उचित प्रयोग करते हुए इल्मी तथा रूहानी स्तर में वृद्धि हो।

(1) घरों में जमाअत के साथ नमाज़ अवश्य पढ़ें।

(2)अगर नमाज़ जुम्अ: मस्जिद में पढ़ने में मनाही है तो घरों में ही नमाज़ जुम्अ: का प्रबन्ध करें।

(3) कुरआन मजीद की तिलावत की पाबन्दी करें।

(4) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सालम और ख़ुलाफ की किताबों का अध्ययन करें। और इल्मी लाभ प्राप्त करें और ये किताबें ऊंची आवाज़ से पढ़ कर बच्चों को भी सुनाने का प्रबन्ध करें

(5) एम टी ए से अधिक से अधिक लाभ उठाने का प्रयास करें और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह

तआला के जुम्अ: के ख़ुत्बों और अन्य तर्बयती प्रोग्राम नियमित रूप से बच्चों और घर वालों के साथ देखें।

(6) दुआओं पर इन दिनों विशेष ज़ोर दें। विशेष रूप से यह दुआ करें कि अल्लाह तआला शीघ्रतर दुनिया को इस महामारी से मुक्ति दे।

(7) अपने बच्चों और घर वालों को समय दें। और उन को धार्मिक बातें सिखाएं और जिस तरह सहायता कर सकते हैं ज़रूर सहायता करें।

(8) ग़रीब तथा परेशान लोगों का ध्यान रखें और जिस तरह सहायता कर सकते हैं ज़रूर सहायता करें।

(9) अपनी सेहत का ध्यान रखें। घरों तथा आसपास की नालियों की सफाई का ध्यान रखें।

(10) अपने हाथों को हमेशा साफ रखें। मास्क का प्रयोग करें। social distancing का विशेष ध्यान रखें।

(11) मजबूरी से ज़रूरी कामों के लिए घर से बाहर निकलते समय लोगों की सहायता करते समय पूर्ण रूप से सावधानी करें।

(12) हुकूमत के आदेशों का पूर्ण पालन करें।

अल्लाह तआला हम में से प्रत्येक को अपनी ज़िम्मेदारियां उत्तम तरीका से सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की आशाओं के अनुसार करने तौफ़ीक़ प्रदान फरमाए। आमीन

अताउल मुजीब लोन

सदर मजलिस अन्सारुल्लाह भारत

❁❁❁

सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमेनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने सालाना इज्तिमा मज्लिस अन्सारुल्लाह भारत के लिए नीचे लिखी तारीखें निर्धारित की हैं।

दिनांक 16.17. 18 अक्तूबर 2020 ई
जुम्अ: हफ्ता तथा रविवार

इज्तिमा में होने वाले प्रोग्रामों के बारे में पहले सर्कुलर नम्बर 2 भिजवाया गया है। इस सर्कुलर के अनुसार अन्सार को अभी से तय्यार करें. और अधिक से अधिक संख्या में अन्सार को इज्तिमा में शामिल होने की तरफ ध्यान दिलाएं।

Mobile : 9572858090, 9955553631
NEW MOBILE POINT
TABASSUM FANCY STORE
Mosabi Market No. 3, East Singhbhum
JHARKHAND Pin - 832104

Cell : 09886083030
زبیر احمد شحنہ
ZUBER
Engineering Works
Body Building All Types of
Welding and Grill Works
HK Road - YADGIR-585201
Dist. Gulbarga - Karnataka

हमारा ख़ुदा

2020 के इज्तिमा में तक़रीरों के मुक़ाबले हेतु

सय्यद तुफ़ैल अहमद शहबाज़ क़ादियान

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عٰلِمُ الْغَیْبِ وَ الشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِیْمُ

- अर्थात वही अल्लाह है जिसके अतिरिक्त अन्य कोई पूजनीय नहीं, प्रत्यक्ष का जानने वाला है तथा अप्रत्यक्ष का भी, वही है जो बिना मांगे देने वाला है, अत्यंत दयावान है तथा निरन्तर दया करने वाला है। (सूर: अलहश्र-23)

मेरी रात दिन बस यही इक सदा है
कि इस आलमे कौन का एक ख़ुदा है

सदर इजलास और मेरे प्यारे भाईयो, आज की इस बरकत पूर्ण सभा में इस विनीत के निवेदन का शीर्षक है ''हमारा ख़ुदा''

प्यारे भाईयो, इस आयत में संक्षिप्त एवं समृद्ध रूप से हमारे प्यारे ख़ुदा के गुण बयान किए गए हैं। ख़ुदा वह अस्तित्व है जो सार्वभौम है, परोक्ष का ज्ञाता है, वह समस्त सृष्टि का पालनहार है, दयावान तथा कृपावान है, न्याय के अन्तिम दिन का स्वामी है, सब कुछ सुनने वाला तथा जानने वाला है। क़ुर्आन करीम में अल्लाह तआला के 104 गुणात्मक नाम आए हैं। सूर्य, चाँद, सितारे, धरती, आकाश, वायु, जल, फ़रिशते, मनुष्य, पशु पक्षी इत्यादि सबको अल्लाह तआला ने ही पैदा किया है परन्तु इंसान को अल्लाह तआला ने प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया है तथा अन्य सभी वस्तुओं को मनुष्य की सेवा के लिए लगा दिया है और मनुष्य के जीवन का लक्ष्य अल्लाह की बन्दगी निश्चित किया है, जैसा कि अल्लाह तआला क़ुर्आन करीम में फ़रमाता है कि

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ

अर्थात- और मैंने जिन व इंस को पैदा नहीं किया किन्तु इस उद्देश्य के लिए कि वे मेरी बन्दगी करें। (सूर: अज़्ज़ारियात- 57)

हमारे इस दायित्व में सहायता हेतु अल्लाह तआला ने एक लाख चौबीस हज़ार नबियों को भेजा तथा सबके अन्त में हज़रत अक़दस मुहम्मद मुस्तुफा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पूरी सृष्टि के लिए भेजा और फिर इस ज़माने में हज़रत इमाम मेहदी व मसीह मौऊद अलै. को हमारे सुधार के लिए भेजा। वैसे तो अल्लाह तआला समस्त प्राणियों का पालन पोषण करता है किन्तु जो उसका पूरा आज्ञा पालन करता है, उसके आदेशानुसार सुन्दर रंग में अमल करता है, अल्लाह तआला की विशेष कृपा उसके साथ होती है, जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलै. फ़रमाते हैं कि-

''वह ख़ुदा अत्यंत वफादार ख़ुदा है तथा वफादारों के लिए उसके विचित्र काम प्रकट होते हैं। दुनिया चाहती है कि उनको खा जाए तथा हर एक शत्रु उन पर दांत पीसता है परन्तु वह जो उनका दोस्त है प्रत्येक विनाश के स्थान से उसे बचाता है तथा हर एक मैदान में उनको विजय प्रदान करता है, क्या ही नेक स्वभाव वह व्यक्ति है जो उस ख़ुदा का दामन न छोड़े''

(कश्तीय नूह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 20)

अत: ध्यान रहे कि सांसारिक समृद्धि कितनी भी मनुष्य को प्राप्त हो जाए वह स्थाई नहीं बल्कि अस्थाई है परन्तु आध्यात्मिक विकास वह है जिसका दाता ख़ुदा है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं-

''क्या ही दुष्ट है वह मनुष्य जिसको अब तक यह पता नहीं कि उसका एक ख़ुदा है जो प्रत्येक चीज़ पर प्रभुत्व रखता है। हमारी जन्नत हमारा ख़ुदा है, हमारे अनन्त आनन्द हमारे ख़ुदा में हैं क्यूँकि हमने उसको देखा तथा प्रत्येक सुन्दरता उसमें पाई। यह सम्पत्ति लेने के योग्य है चाहे जान देने से मिले तथा यह हीरा ख़रीदने के योग्य है चाहे सम्पूर्ण अस्तित्व खो देने से मिले। ऐ महरूमो! उस स्रोत की ओर दौड़ो कि वह तुम्हें सींचेगा, यह जीवन सरिता है जो तुम्हें बचाएगी, मैं क्या करूँ और किस तरह इस ख़ुशख़बरी को दिलों में बिठा दूँ, किस डफ़ली से बाज़ारों में मुनादी करूँ कि तुम्हारा यह ख़ुदा है ताकि लोग सुन लें''

(कश्तीय नूह, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 19, पृष्ठ 21,22)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ फ़रमाते हैं

''अत: शुद्ध हो जाओ, अल्लाह तआला को तलाश करने वाले ही अल्लाह तआला को पा सकते हैं - अल्लाह तआला की निकटता के विभिन्न चरण हैं जो एक निरन्तर संघर्ष से अल्लाह तआला के ध्यान को धारण करके इंसान को अल्लाह तआला की निकटता दिलाते हैं। अत: अल्लाह तआला को पाने के लिए अल्लाह तआला के तरीक़े के अनुसार कोशिश करने की आवश्यकता है। अल्लाह तआला पर तथा परोक्ष पर ईमान तथा उसकी शक्तियों पर सम्पूर्ण ईमान इस निरन्तर प्रयास की ओर इंसान को अग्रसर करता है''

(ख़ुत्बः जुम्अः 3 सितम्बर 2010 ख़ुत्बात मसरूर जिल्द 8, पृष्ठ 461)

अल्लाह तआला हम सबको वास्तविक अर्थ में ज़ात-ए-इलाही के साथ वास्तविक सम्पर्क पैदा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

❁❁❁

तर्बियत औलाद और अन्सार की ज़िम्मेदारियाँ

2020 के इज्तिमा में तक़रीरों के मुक़ाबले हेतु

शेख़ मुहम्मद ज़करिया क़ादियान

يٰاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا

(सूरः तहरीम-7) अर्थात हे लोगो जो ईमान लाए हो! अपने आपको तथा अपने बीवी बच्चों को आग से बचाओ।

मेरी औलाद जो तेरी अता है
हर इक को देख लूँ वह पारसा है
तेरी क़ुदरत के आगे रोक क्या है
वह सब दे उनको जो मुझको दिया है
अजब मोहसिन है तू बहरुल अयादी
फ़ सुबहानल्लज़ी अख़ज़ल अआदी

सदर इजलास और आदरणीय श्रोतागण! ख़ाकसार की तक़रीर का शीर्षक है ''तर्बित ए औलाद और अन्सारुल्लाह की ज़िम्मेदारियाँ''

श्रोताओं, इस्लाम ने संतान की तर्बियत को जो महत्त्व दिया है उसका अनुमान इस बात से लगाया जा सकता है कि अभी जबकि संतान का अस्तित्व सोचा भी नहीं गया होता आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि निकाह के लिए सदैव सबसे पहले नैतिकता तथा दीन के गुणों को देखा करो। यदि अच्छी संतान चाहिए तो संतान पैदा करने वाली माँ की चिंता करनी चाहिए कि वह प्रशिक्षित हो। जिस तरह अच्छी फ़सल पाने के लिए उत्तम तथा उपजाऊ धरती चाहिए उसी तरह नेक संतान की प्राप्ति के लिए सुशील तथा तर्बियत वाली पत्नी का चयन प्राथमिता चाहता है,

श्रोताओं, वालदैन को अपनी औलाद की तर्बियत के लिए नमूना बनना तथा उनके लिए दुआ करना अत्यंत आवश्यक है।

इस विषय में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि ख़ुद नेक बनो तथा अपनी औलाद के लिए एक उत्तम नमूना नेकी और तक्वा का हो जाओ तथा उसको मुत्तक़ी और दीनदार बनाने के लिए कोशिश और दुआ करो, जितना प्रयास तुम उनके लिए धन एकत्र करने के लिए करते हो उतनी की कोशिश इस काम में करो। "

(मल्फ़ूज़ात, भाग 8, पृष्ठ 109)

इस तरह बचपन से ही औलाद को प्यार मुहम्मबत के साथ दीन की बातें बताने, अपने साथ नमाज़ों में खड़ा करने तथा अन्य दीनी आयोजनों में उनको सम्मिलित करने की आवश्यकता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ''यह बात ध्यान देने योग्य है कि दीन की

शिक्षा को ग्रहण करने के लिए बचपन का ज़माना ही उचित तथा उपयुक्त है, बचपन में स्मरण शक्ति व्यापक होती है मानव आयु की किसी अन्य अवधि में ऐसी स्मरण शक्ति कभी नहीं होती''

(मल्फ़ूज़ात, भाग एक, पृष्ठ 70)

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला फ़रमाते हैं-

''फिर एक समान्य बात है जिसकी ओर माता पिता को ध्यान देना होगा, वह है अपने बच्चों में अल्लाह तआला के अप्रसन्न होने का भय पैदा करें, उन्हें मुत्तक़ी बनाएँ और यह उस समय तक नहीं हो सकता जब तक माता पिता स्वयं मुत्तक़ी न हों अथवा मुत्तक़ी बनने की कोशिश न करें, क्यूँकि जब तक अमल नहीं करेंगे मुंह की बातों का कोई प्रभाव नहीं होता''

(ख़ुत्बः जुम्अः 27 जून 2003)

और तर्बियत औलाद के लिए दुआ अनिवार्य है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं- ''मेरी तो यह हालत है कि मेरी कोई नमाज़ ऐसी नहीं है जिसमें अपने दोस्तों और अपनी औलाद और अपनी बीवी के लिए दुआ नहीं करता'' (मल्फ़ूज़ात, भाग 2 पृष्ठ 372)

अल्लाह तआला ने क़ुर्आन करीम में हमें कुछ दुआएँ सिखाई हैं *रब्बे हब्ली मिनस्सालेहीन*(अस्साफ़्फात-101) कि हे अल्लाह मुझे नेक औलाद अता फ़रमा। *रब्बे जअलनी मुकीमुस्सलाते वमिन ज़ुर्रयती रब्बना वतकब्बल दुआए(*सूरः इबराहीम-41) अर्थात ऐ हमारे रब, मुझे और मेरी औलाद को नमाज़ क़ायम करने वाला बना और दुआ को क़बूल फ़रमा।

इसके बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम ए रज़ी. के बताए हुए तर्बियत-ए-औलाद के दस स्वर्ण नियम सदैव सम्मुख रखने चाहिएँ कि पुरुष दीनदार नारियों से शादी करें, स्वयं नारी दीनदार बने, बच्चे पैदा होते ही तर्बियत शुरु की जाए, बच्चों के दिलों में परोक्ष पर ईमान सुदृढ़ किया जाए, बच्चों को नमाज़ का पाबन्द बनाया जाए, आरम्भ से ही अल्लाह के लिए धन के बलिदान की आदत डालें, शिर्क से बचाएँ, वालिदैन तथा बुज़ुर्गों का आदर सिखाएँ, सच बोलने की आदत डालें, बच्चों की तर्बियत के लिए सबसे उत्तम विधि दुआ है।

श्रोताओं, इरशाद नबवी स.अकरेमू औलादकुम व अदबहुम पर लब्बैक कहना अन्सारुल्लाह का प्रथम दायित्व है, क्यूँकि कहावत है ''तिफ़्ल इमरोज़ क़ायद फ़रदा'' अर्थात आज का बच्चा कल क़ौम का नेता होगा। इसी लिए नेपोलियन ने कहा था कि मुझे अपने बच्चे सात साल के लिए दे दो मैं तुम्हें एक अच्छी क़ौम दूँगा। तंज़ीम के संस्थापक हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी फ़रमाते हैं-

''मैं अन्सार को भी नसीहत करता हूँ कि बच्चों की तर्बियत अत्यंत आवश्यक चीज़ है तथा उनकी निगरानी न करना एक भयानक ग़लती है''

(मश्अले राह, भाग एक, पृष्ठ 456)

दुआ है कि अल्लाह तआला हमें एहसन रंग में अपनी औलाद की तर्बियत करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए, आमीन।

Mob: 9008510546
Akmal Tailor
Hill Road, Madikeri - 571201

Pants, Shirts & All Gents Wears Stitching Here

Maqbool Ahmed Cell : 9949310679
: 9949209561
Plant Medicine
Special Treatment for : Kidney Failure, Kidney Enlarge, Shrinkage, Kidney Gall Bladder Stone, Piles
H. No. 18-2-69/a, Jangammet, Falaknuma, Hyderabad - 53